प्रसाद साहित्य और शाश्वत जीवन मूल्य

*डॉ. श्रीमती शोभना जैन

जैसे उजली धूप सबको हँसाती हुई आलोक फैला देती है, जैसे उल्लास की मुक्त प्रेरणा फूलों की पंखुडियों को गदगद कर देती है, जैसे सुरभि का एक झौंका सबका आलिंगन करने के लिए बेचैन रहता है, वैसे ही जीवन की निरन्तर परिस्थिति होना चाहिए। आनन्द (एक घूंट)

आनन्द जी के मुख से कही गई उपर्युक्त पंक्तियों मैं प्रसाद जी के चिंतन एवं जीवन दर्शन तथा काव्यदर्श की एक झांकी दिखाई देती है।

प्रत्येक कवि या रचनाकार की अपनी जीवन मूल्य पद्धति होती है इस पद्धति के नियामक घटकों मैं उसके संस्कार परिवेश स्वाध्याय, सामाजिकता, माली हालत, इतिहास बोध, अर्न्तमुखी अथवा बहिर्मुखी मानसिक वृत्तियाँ आदि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

जीवन मूल्यों मैं तेजी से आती गिरावट के कारण यह पहचान खो सी गई है। इसे हम पश्चिमी समीक्षा पद्धति का दुष्प्रभाव मानें या स्वयं रचनाकारों द्वारा रचा गया स्व को छिपाने का एक षड्यंत्र माने–यह हमैं सोचना होगा विशेषतः युवा पीढ़ी को ताकि वह विभिन्न रचनाओं का सही परिप्रेक्ष्य से देखपरख सकें।

लोक मंगल की दृष्टि से विशेषतः जीवन मूल्यों मैं कितना साम्य अथवा ! वैषम्य है। यदि इन दोनों मैं विषमता है तो किस श्रेणी या स्तर की और कितनी है। इस समता और विषमता पर ही क्रमशः रचना की अभिव्यक्ति की सहजता और कृत्रिमता निर्भर करती है।

शाश्वत जीवन मूल्यों की स्थापना एवं प्रतिस्थापना की दृष्टि से और सहज भाव से देखा जाये तो प्रसाद साहित्य के पाँच प्रयोजन सामने आते हैं :–

1 मानव की सोयी आस्था को जगाना
(संदर्भ, मनु का श्रद्धा से पुनः मिलन)
2 खोई हुई अस्मिता की पहचान कराना
(संदर्भ ऐतिहासिक काव्य नाटकों मैं अंकित बौद्ध एवं गुप्त काल का सांस्कृतिक उत्कर्ष)
3 बाह्याचारों से ग्रसित कृत्रिम धर्म का विरोध करना
(जल प्लावन द्वारा देव सृष्टि का विनाश)
4 अनात्मवाद एवं अहंकार
(मूलक आत्मबाद का खण्डन तथा विश्वात्मबाद की पुष्टि करके मानव की आत्महीनता की भावना को दूर करना)
5 अनास्था, सन्देह, तर्क, भय, कुंठा, आदि विज्ञान प्रदत्य निबंधात्मक जीवन मूल्यों के स्थान पर प्रेम, सौंदर्य, विश्वास, शांति, मानवता, आदि विधेयात्मक मूल्यों की प्रतिष्ठा करना
(संदर्भ इड़ा से संर्घष के उपरान्त मनु की हताशा, श्रद्धा के पुनः मिलन से समरसता की प्राप्ति, कामायनी के प्रथम चिन्ता, सर्ग मैं निराश मनु को कर्मशील बनाने के लिए श्रद्धा के एक ओजस्वी भाषण एवं मानवता के संदेश की उद्भावना की गई है, जिसके कारण मनु निवृत्त मार्ग की अपेक्षा प्रवृत्ति मार्ग की ओर प्रवृत्त होकर लोक कल्याण के प्रति उन्मुख होते हैं।

परंपरागत जीवन मूल्यों के हिमायती होते हुए भी वे प्राचीनकाल की जीर्ण–शीर्ण परंपराओं और मान्यताओं को काल संगत मानते है। इस काल आच्छादित और विज्ञान की सुगंध ा से सुवासित युग मैं सामाजिक चेतना से जागृत मानव के लिए युगानुरुप नूतन जीवन मूल्यों के सृजन एवं सत्यापन को प्रसाद जी अत्यावश्यक मानते थे। अनेक प्राचीन परंपरागत मूल्य जैसे अपरिगृह आदि के आज के युगमैं विसंगत हो गये है :–

प्रकृति के यौवन का श्रृंगार
करेंगे कभी न बासि फूल
मिलेगें वे जाकर अतिशीघ्र
आह उत्सुक है उनकी धूल

आधुनिक जीवन मैं मानव मूल्यों के गहराते संकट से प्रसाद सुपरिचित थे। इसलिए उन्होनें अपने साहित्य मैं जीवन के शाश्वत जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा करके लोगो मैं आस्था जगाना और उनकी आत्महीनता को दूर करना अपना पवित्र दृष्टिकोण बनाया।

जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा हेतु प्रसाद जी की यह पुकार प्रसाद साहित्य मैं यत्र तत्र व्याप्त है। कतिपय मूल्य देश काल सापेक्ष होते है। सापेक्षता का सिद्धांत जीवन मूल्यों के संबंध मैं चरितार्थ होता है। देश काल मैं परिवर्तन आने से इनके स्वरुप मैं परिवर्तन आता है। प्रसाद जी के अनुसार परिवर्तन एक सत् एवं अपरिहार्य प्रक्रिया है। उनके अनुसार परिवर्तन ही सृष्टि है, जीवन है। स्थिर होना मृत्यु है, निष्चेष्ट शांति मरण है। प्रकृति के श्रंगार के लिए नये जीवन मूल्य रुपी फूलों की आवश्यकता है उनका नाट्य साहित्य है भी तो ऐसा ही गहन गंभीर उद्देश्य से अभिप्रेरित है। उसमैं मनोरंजन कम एवं चिन्तन अधिक है। जैसा कि राष्ट्र कवि मैंथलीशरण गुप्त ने कहा है :–

केवल मनोरंजन ही न कवि धर्म होना चाहिए।
उसमैं कुछ उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।।

इस प्रकार हम कह सकते है कि प्रसाद जी ने वेदों के कर्मवाद उपनिषदों की ज्ञान मीमांसा गीता का कर्मयोग शैवागम,शैव द्वैतवाद बुद्ध की करुणा, पुनर्जागरण काल का नया मानवता वाद आदि के आधार पर अपना समत्वादी एवं आनन्दवादी मौलिक जीवन दर्शन एवं काव्यादर्श का विकास किया था। मानव की सोई हुई आस्था और अस्मिता को जगाकर समाज मैं व्याप्त अनास्था, आत्महीनता, तर्क, शंका, भय, आदि निषेधात्मक जीवन मूल्यों से लोगो को पराड.– मुख करके उनके हदयों मैं विधेयात्मक एवं शाश्वत आध्यात्मिक जीवन मूल्यों की ज्योति जगाना, उनका मुख्य साहित्य दर्शन रहा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1	प्रसाद गंथावली भाग एक (प्रसाद का संपूर्ण काव्य)	जयशंकर प्रसाद	लोकभारती प्रकाशन इलाहबाद
2	कामायनी	जयशंकर प्रसाद	लोकभारती प्रकाशन इलाहबाद
3	प्रसाद,निराला,अज्ञेय	डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी	लोकभारती प्रकाशन इलाहबाद
4	प्रसाद काव्य मैं बिंब योजना	डॉ. रामकृष्ण अग्रवाल	लोकभारती प्रकाशन इलाहबाद
5	छायावादी कवियों का सांस्कृतिक दृष्टिकोण	डॉ. प्रमोद सिन्हा	लोकभारती प्रकाशन इलाहबाद

* सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) शासकीय महाविद्यालय सारनी जिला–बैतूल (म.प्र.)